जयगुरुदेव

भविष्य की झलक अतीत के आइने से

सन् साठ व सत्तर के दशक में बाबा जयगुरुदेव ने फरमाया

जयगुरुदेव
विनम्र निवेदन

यह किताब जो आप के सामने रखी जा रही है, इसमें भारत प्रसिद्ध महात्मा, मथुरा निवासी परम् सन्त, परम् पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज की विचार-धारा छपी है। यह विचार-धारा, न तो भौतिक आकांक्षाओं, न किसी राजनीतिक पद-प्रतिष्ठा की चाह और न तो किसी को गिराने या मिटाने की भावना से प्रेरित है। केवल जनसमुदाय के हितों, जीवों की रक्षा, पारिवारिक व सांसारिक सुख-शान्ति, जन-जन की मान-प्रतिष्ठा, एक-दूसरे के प्रति सद्भावना वापस लाने के लिये, ये बाबा जयगुरुदेव जी की वाणी है। बाबा जी आत्माओं के डॉक्टर हैं। इस किताब के एक-एक शब्द को गौर से पढ़कर समझने की और सोचने की कोशिश कीजिए। शंकाओं के अम्बार को पलभर के लिये बगल रख दीजिए। तर्क-वितर्क की भावना खूब उठेगी इसका समाधान सिर्फ स्वामी जी महाराज (बाबा जयगुरुदेव जी) के समीप आने पर ही होगा।

आप सम्माननीय व बुद्धिमान हैं। ज्यादा कुछ कह नहीं सकते हैं। आप का भी बहुत बड़ा दायित्व है। महात्मा तो सिर्फ मार्गदर्शक होते हैं।

– प्रकाशक

दि. 28 सितम्बर 2011
जयगुरुदेव आश्रम
आगरा-दिल्ली रोड, मथुरा, उ.प्र.-281004
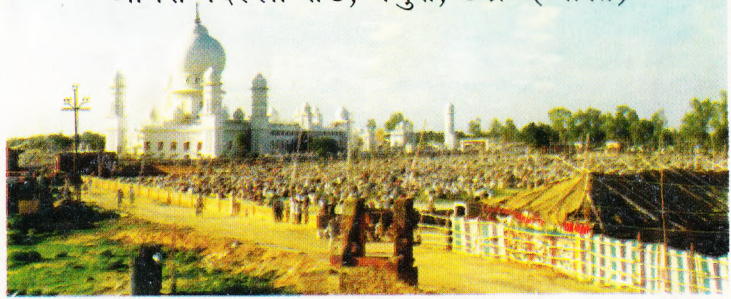
जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संस्था
जयगुरुदेव योगस्थली, आगरा-दिल्ली रोड, मथुरा-281004
फोन : 0565-2460051
E-mail : prakash180@sancharnet.in

हमको हुकुम है सबको बता दो।
आये शरण उसे माफी करा दो॥
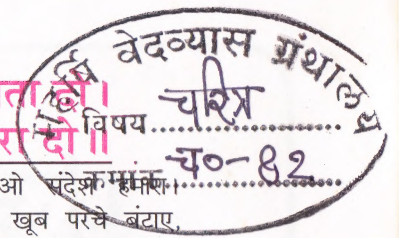
दिल में हमारे दर्द है तुम्हारा, सुने तो जाओ संदेश हमारा।
हमने तुम्हारे लिए जलसे रचाए, गली-गली में खूब परचे बंटाए,
समझो न अब फिर भाग्य तुम्हारा।
हमने कही है सो आई है आगे, होगा जरूर जो कहूँगा फिर आगे,
मालिक की मौज कुछ ऐसा इशारा॥
शहरों व गांवों में सबको सुनाया, मालिक मिलन का है भेद बताया,
सोचो तो क्या ऐ पागल गंवारा॥
कहना न कल हम जान न पाए, इसी लिए हम आ नहीं पाए,
करते हैं हम कर्तव्य हमारा।
है कुछ आसार, अब ऊपर ही से होगा, कर्मों का बादल बवण्डर बनेगा,।
बरसेंगी बहेगी तेरे पापों की धारा॥
हमको हुकुम है कि सबको बता दो, आए शरण उसे माफी करा दो,
जानो अब आप, काम जाने तुम्हारा॥
पूरब व पश्चिम में बदबू बहेगी, उत्तर व दक्षिण में खूब धधकेगी,
लाशों पे लाशों का होगा नजारा॥
अन्न, दवाओं की कमी पड़ेगी, पेड़ों की पत्ती न तुमको मिलेगी,
फट जाए धरती उठेगा गुबारा॥
पूरब व पश्चिम का पाकिस्तान मिटेगा, अरब इजरायल आपस में लड़ेगा,
खून की नदियों की बहेगी धारा॥
परचे में बातें सभी सच्ची लिखीं हैं, दिखतीं असम्भव पर सम्भव सभी हैं,
है अचूक ये दावा हमारा॥
भारत में एक पुरुष जन्मा कहीं है, जिसकी महत्ता का वर्णन नहीं है,
सहायक शक्तियों का नहीं पारवारा॥
सभी देशों के अणु बम नाकाम होंगे, छोटे-छोटे देश बड़े देशों में मिलेंगे,
भारत की अध्यात्म शक्ति का होगा पसारा॥
बीता 70-71 अब 72 है आया, जिसके लिए था हमेशा चिल्लाया,
होगा शुरू अब यहीं से निपटारा॥
मेरी न मानो तो एण्डरसन की मानो, चाहे प्रोफेसर हरार की ही मानो,
पश्चिम का तुम पै चढ़ा है नजारा॥
जो मैं कहूँगा दोहराना पड़ेगा, झण्डे के नीचे तुम्हें आना पड़ेगा,
होकर लाचार नाम लोगे हमारा॥
मौका अभी है कुछ कर लो, करा लो, बचना जो चाहो तो साथी बना लो,
समझो तो क्या यह सच रखवारा॥
सेवा अहिंसा हमारी है नीति, जीवों से प्रेम यही है सत्नीति,
आत्मज्ञान का यही है भण्डारा॥
प्रेम का पाठ पढ़ाते रहेंगे, मानव धर्म को जगाते रहेंगे,
जयगुरुदेव नाम का अब होगा पसारा, सुने तो जाओ संदेश हमारा॥

पूंजीपति भी राजाओं की तरह खत्म होंगे

एक दिन जल्द आ रहा कि पूंजीपति महाराजाओं की तरह खत्म होंगे और जो धन दुर्व्यवहार से कमाया है वह सब खत्म हो जाएगा। कर्म अनुसार सभी प्राणियों को घोर कष्ट उठाना होगा। बीमारी भयंकर रूप से उठेगी, भूचाल आएगा, लड़ाई-झगड़े होंगे, समष्टि रूप से एक बड़ा विद्रोह हो जाएगा। पता लगेगा नहीं कितने आदमी रहेंगे, कितने खत्म हो जायेंगे। यहाँ तक होगा कि बहुत से मुल्क खत्म होंगे। ऐसा होगा कि जैसे वह थे ही नहीं। यह क्यों होगा? क्योंकि पाप भयंकर रूप से बढ़ गया है।
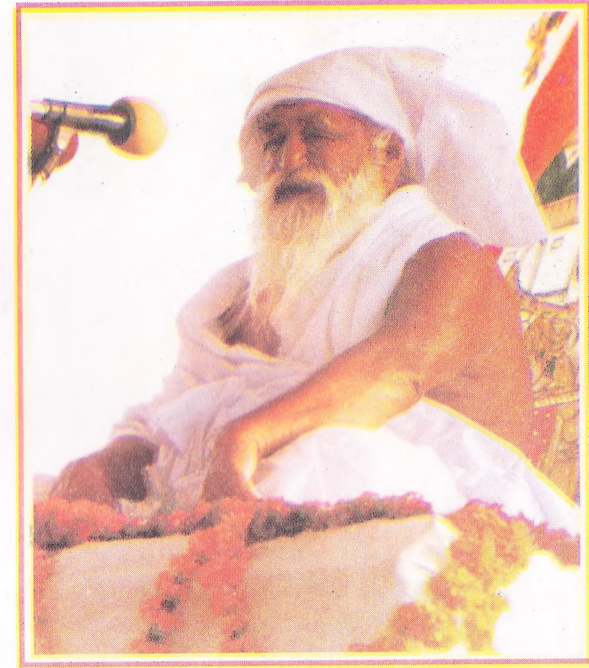
काला धन 24 घण्टे में सफेद करके दिखा दूंगा

ऐ किसानों, नौजवानों, अधिकारी, कर्मचारी! यदि तुम मेरा साथ दे दो तो मैं सब काला धन 24 घण्टों मे सफेद करके दिखा दूंगा और एक पैसा टैक्स उसका नहीं देना पड़ेगा, और यदि मेरा साथ न दिया तो तुम पछताओगे और अपनी गल्तियों की माफी मांगोगे। .... बाबा जयगुरुदेव

इस जमाने में कोई क्या भगवान की याद करेगा

आप लोग, जब कभी भगवान की पूजा में बैठते होंगे मन्दिर में, मस्जिद में जब खुदा की इबादत करते होंगे, आंख भी खुली होगी। भगवान की मूर्ति भी सामने होगी। लेकिन उस समय पर आपको क्या याद आता होगा कि घर में गल्ला नहीं, घर में तेल नहीं, घर में घी नहीं, घर में चीनी नहीं, घर में मसाला नहीं, पुस्तक नहीं, तो फीस नहीं और ये नहीं और कपड़ा नहीं, हर वक्त चौबीसों घण्टे आपके ये सब चीजें सामने नाचती रहती हैं।

तो पूजा कौन कर लेगा। पूजा तो वह करता है कि सुविधाजनक सामान मिल जाये और आराम से मिल जाये। मेहनत कितनी खेत में करें, दफ्तर में करें लेकिन सामान तो मिल जाये और जो हमको वेतन मिले उसमें सुविधा कम से कम तो मिल जाये। लेकिन वेतन मिलता कम और मंहगाई है दस गुनी ज्यादा तो हम पूरा नहीं कर पायेंगे। तो हमारे बच्चे रोयेंगे, हमारी बच्चियां रोयेंगी। और घर में कोई रिश्तेदार आगया तो क्या होगा, मेरा क्या होगा ? .. हम ये चाहते हैं कि सबको रोटी, सबको काम, सबको कपड़ा, सबको न्याय, सबको मकान, सबको सुरक्षा, ये जीवन की जो वस्तुयें हैं, शरीर रक्षा के लिए वे सबको मिलें।

तुम्हें मजबूरन सुनना पड़ेगा

अब आप सुन लें । एक आदमी दुनियाँ में ऐसा पैदा हो गया है कि जो दुनियाँ के लिए इतना खराब और इतना अच्छा कि जो पिछले से अब तक के इतिहास को बदल देगा । लेकिन तुम अभी उधर ही जा रहे हो, और जब वक्त आ जाएगा तब तुम्हें पता चलेगा, मामूली बात नहीं है, बड़ी बात है । उस बड़ी बात को समय आने पर ही कहना चाहता हूँ। तुम्हें मजबूरन सुनना पड़ेगा। चाहे तुम किसी भी अवस्था में सुनो।.... बाबा जयगुरुदेव

महात्माओं ने कभी राज नहीं किया

बाबा जी का कोई भी विचार इस प्रकार का, कोई स्वयं व्यक्तिगत नहीं है कि बाबा जी कोई राज करने वाले हैं। क्योंकि महात्माओं ने कभी राज नहीं किया। रामदास जी से आशीर्वाद शिवाजी को मिला। उन्होंने कोई राज किया नहीं।.. बाबा जयगुरुदेव

छोड़कर संसार जब तू जाएगा।

छोड़कर संसार जब तू जाएगा।
कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

गर प्रभु का भजन किया न, सत्संग किया न दो घड़ियां।
यमदूत लगाकर तुझको, ले जायेंगे हथकड़ियां।
कौन छुड़वाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़कर...

इस पेट भरन के खातिर, तू पाप कमाता निस दिन।
शमशान में लकड़ी रखकर, तेरे आग लगेगी इक दिन।
ख़ाक हो जाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़कर...

सत्संग की बहती गंगा तू इसमें लगा ले गोता।
वरना इस दुनियाँ से तू जाएगा इक दिन रोता।
फेर पछताएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़कर...

क्या कहता मेरा-मेरा यह दुनियां रैन बसेरा,
यहां कोई न रहने पाता, है चन्द दिनों का डेरा।
हंस उड़ जाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़कर...

गुरुदेव शरण में निस दिन, तू प्रीत लगाले बन्दे,
कट जायेंगे सब तेरे, ये जनम-मरण के फन्दे,
पार हो जाएगा, कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़कर...

मेरा परिचय

मैं कोई फकीर और महात्मा नहीं हूँ। मैं न कोई औलिया हूँ, न कोई पैगम्बर और न अवतारी हूँ। मैं भी एक आपकी तरह से इन्सान और आदमी हूँ। जैसे आप हैं वैसे मैं भी हूँ और जो हक, जो आपको हक, उस खुदा ने अधिकार दिए मुझे भी दिया है। आपने उसका उपयोग किया या नहीं किया, आप जानें, मैंने उसका उपयोग किया। मैं मुर्शिद और गुरुओं के चरणों में गया और अपने गुनाहों की माफी मांगी, न मालूम किस जन्म के होंगे उस समय पर उनके चरणों में मस्तक को रखा और उनकी मेहरबानी और दया लेकर जो उन्होंने दी थी उसकी रियाज और अभ्यास और साधन और योग किया।

बाबाजी आपके सामने बैठे हैं। ये भी किराये के मकान में हैं। मुझको भी इस किराये के मकान को खाली करना है। मैंने उसके दिए हुए मकान से अपना काम कर लिया और जब भी उसका हुक्म हो जाए, आज्ञा हो जाए, फौरन खाली करने के लिए तैयार हूँ। इस किराये के मकान का नाम तुलसीदास और एक छोटा सा आश्रम मथुरा में है, जहाँ कि कई लाख आदमी प्रतिवर्ष जाया करते हैं। सच्चे सनातन धर्म का प्रचार करता हूँ। जीवात्मा जहाँ से आई उसी घर में पहुँचाने का रास्ता इस मनुष्य रूपी मकान में सबके पास है उस रास्ते को बतलाता हूँ। मैं ईश्वर को और आत्मा को मानता हूँ। रामायण, गीता, वेद, पुराण, शास्त्र इन सबको सिर माथे रखता हूँ। उसमें जो शिक्षा लिखी हुई हैं उसका पालन स्वयं करता हूँ।

जयगुरुदेव नाम का प्रचार करता हूँ....लेकिन विशेष बात आपको एक यह मिलेगी कि सारे हिन्दुस्तान में जयगुरुदेव नाम का प्रचार करता हूँ और जयगुरुदेव नाम उस परम् पिता सर्व शक्तिमान, उस प्रभु का है जो जन्म में और मरण में नहीं आता है। जो छोटा और बड़ा नहीं होता है। जहाँ सुबह और शाम नहीं होती। जो हिन्दू और मुसलमान नहीं बनाता। वह परम् पिता परमात्मा, वह प्रभु उसका नाम जयगुरुदेव।

पूरे हिन्दुस्तान में जयगुरुदेव नाम मिलेगा....सारे हिन्दुस्तान में जिधर भी जायेंगे आपको जयगुरुदेव नाम का प्रचार मिलेगा। मुझको बच्चा-बच्चा जानता है लेकिन बात असली यह है कि जब आपका कपड़ा गन्दा हो जाए तो आप या तो साबुन लगायें, या धोबी कपड़े को साफ करके आपको दे दे। इसी तरह हे ब्राह्मण, क्षत्रियों, वैश्यों, वास्तव में मैं कोई जाति का धोबी नहीं हूँ लेकिन वैसे मैं धोबी का काम सदैव ही करता रहूँगा और आपके बीच राम ने, कृष्ण ने, कबीर ने, रैदास ने, तुलसीदास ने, मीराबाई ने और बड़े-बड़े ऋषि-मुनि आए, बाल्मीकि के गुरु भी आए, उन्होंने भी यही काम धोबी का किया था। मैं भी वही धोबी का काम करता हूँ। क्या करते हैं काम ? मन को, बुद्धि को, चित्त को, अन्तःकरण को, जीवात्मा को, आँख को और कान को साफ करता हूँ।

शिवनेत्र खोलता हूँ...और शिवनेत्र, ज्ञानचक्षु, दिव्यनेत्र, तीसरा नेत्र है। जो मनुष्य रूपी मकान में सबके पास है उसको खोलता हूँ और उसके बिना, मनुष्य रूपी मकान में खुले हुए न स्वर्ग में जा सकते हैं, न बैकुण्ठ में, न ब्रह्मा का दर्शन, न विष्णु का दर्शन, न शिव का दर्शन, न ईश्वर का और न पारब्रह्म का दर्शन।

महात्मा मिलेंगे तभी दर्शन होगा....ये अनिवार्य और जरूरी है कि कोई आपको महात्मा मिल जायें जो आपके मनुष्य रूपी कपड़े को साफ कर दें। और दिव्य नेत्र, ज्ञान चक्षु आपका खुल जाए तो परमात्मा की मणि जो राम नाम रूपी मणि सबके अन्दर जल रही, जिसका अधिकार प्रायः प्रत्येक प्राणी को, प्रत्येक जाति वालों को मिला है, उसमें कोई विभाजन नहीं कर दिया कि मुझको केवल यही पा सकता है और ये नहीं पा सकता।

जब कभी इच्छा हो भगवान को मिलने की, मनुष्य शरीर में मरने के पहले, तो बाबा जी के पास में आप चले आइयेगा...

अब आपको जब कभी इच्छा हो भगवान को मिलने की, मनुष्य शरीर में मरने के पहले, तो बाबा जी के पास में आप चले आइयेगा। आपका कोई गृहस्थ आश्रम नहीं छुड़ाया जाएगा। न साधू बनाना है, न घर को छुड़ाना, न कपड़ों को छुड़ाना, न खाना छुड़ाना है, न कोई काम छुड़ाना है। अपने-अपने घर में स्त्री-पुरुष रहो, दिन में काम करो, खेती करो, नौकरी करो, व्यवसाय करो, शाम को आओ बच्चों की सेवा करो। आप मनुष्य रूपी मकान में, भगवान का जो मन्दिर है और उसी मन्दिर में परमपिता हमेशा से बैठा हुआ है। अपनी आँख के खोलने का रास्ता बाबाजी से ले लो। ये रास्ता जो सत्संग में नामदान के रूप में मिलेगा।

सत्संग सुना नहीं....नर-नारियों, बच्चे-बच्चियों ! जब बिना गुरु के मन्दिर में पूजा इबादत, मस्जिद में नमाज करोगे तो भगवान, खुदा, यीशु कैसे मिलेगा। सत्संग ही महान् है, सत्संग से धुलाई होगी, सत्संग से ही पता चलेगा कि सुरत कहाँ से आई। अभी आपने सत्संग नहीं सुना। सत्संग सुनना होगा और सत्संग में ही नाम की प्राप्ति होगी।

गुरू मंत्र नहीं, दीक्षा नहीं....'नामदान'।..तो पहले युगों में सतयुग, त्रेता, द्वापर में कहते थे मंत्र, गुरुमंत्र, दीक्षा। अब यह तीनों कुछ नहीं। अब इसे 'नामदान'। नामदान के बराबर कोई दान नहीं। सरल, आसान, सीधा, अच्छा है। लेटकर करो, 15 मिनट करो, कभी खेत में करो, कचहरी में करो, दफ्तर में करो, दुकान में करो, समय आपको नहीं मिलता है तो टट्टी में बैठकर कर लो। दो मिनट मेहनत करो दो मिनट की मजदूरी, 10 मिनट मेहनत करो 10 मिनट की मजदूरी। भगवान के दरबार में मेहनत की मजदूरी नहीं रखी जाती। लेकिन करोगे तो पाओगे, नहीं करोगे तो नहीं। हमसे ज्यादा साफ कहने वाला कोई है भी नहीं।

नाम की कमाई करो, सब सिद्धियाँ मिल जायेंगी। वह रसायन क्यों नहीं कमाते। नाम रसायन से सब देवता ब्रह्मा, विष्णु इत्यादि हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। यह युक्ति नाम की लेकर कमाई करो। मैं जानता हूँ कि आप इसको नहीं जानते हैं। मैंने गुरू महाराज की अमूल्य चीज़ को जमीन में डाल दिया। मैंने कई महात्माओं को कहा कि आपके पास यह हीरा है आप इसे संसार में बांटें तो सबका कल्याण हो जाए।

बुरा काम छोड़ना होगा...इस प्रकार की सुगम, साधारण शिक्षा सारे भारतवर्ष में देता हूँ। जाति-पाँति का कोई भेदभाव नहीं, कुछ चरित्रता तथा सदाचार की बातें। जो बुरी हैं उसे सबको छोड़ना होगा, चाहे वह हिन्दू-मुसलमान, छोटा-बड़ा , क्षत्रिय, वैश्य कोई भी हो। उनको ये बुराइयाँ सभी छोड़नी होंगी। चोरी हिन्दू-मुसलमान छोटे-बड़े के लिए, डकैती हिन्दू-मुसलमान, छोटे-बड़े के लिए वर्जित और बुरी है। इन कामों के लिए मुसलमानों की पुस्तकों में और

हिन्दुओं की पुस्तकों में सबके लिए मना किया गया है। लेकिन हम सब उन सब कामों को करते हुए बुरे रास्ते पर उतर गए और मानव कर्म छूट गया और मानव धर्म भी छूट गया और आध्यात्मिक धर्म भी छूट गया। आत्मकल्याण का मार्ग भी छूट गया, आत्मकल्याण के सद्‌गुण और सद्‌विचार भी चले गए। मानव विचार भी हमारे अन्दर नहीं रहे।

धर्म की स्थापना के लिए कोई न कोई महान् आत्मा आती है... धर्म की स्थापना के लिए कोई न कोई महान् आत्मा आती है। यह तो पशुओं के विचार इस समय उत्पन्न हो गए और उसको छुड़ाने के लिए भारत में किसी न किसी को आना ही पड़ता है। यह आपकी धर्म पुस्तकें बताती हैं। कभी बौद्ध बनकर, कभी राम बनकर, कभी कृष्ण बनकर, कभी कबीर बनकर, कभी तुलसीदास बनकर और कभी मोहम्मद, महावीर, शंकराचार्य बनकर। जब जैसा समय आता है मनुष्यों को कष्ट होता है, मनुष्य पीड़ित होते हैं, हाहाकार होता है। झूठ, छल-कपट, फरेब, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अनेक विकार उत्पन्न हो जाते हैं। हिंसायें होने लगती हैं। न्याय, नीति और सत्य नाम की कोई चीज़ रहती नहीं। तो ऐसे समय पर सारे देश में मानव में अधर्म फैल जाता है। धर्म की स्थापना के लिए कोई न कोई इस मनुष्य रूपी किराये के मकान में महान् आत्मा आती है। उसको साक्षात्कार मनुष्य रूपी किराये के मकान में होता है और इसी के द्वारा समाज का, मनुष्य का, देश का और सब चीजों का परिवर्तन होता है और वह सब न्याय, सब नीतियों को जानते हैं।

आमदनी का दसवाँ भाग गरीबों-मोहताजों साधू-फकीरों की सेवा में खर्च करो... हम लोगों के लिए यह कहा गया था कि हम अपनी हक-हलाल की कमाई में से दसवाँ हिस्सा गरीबों, मोहताजों, साधू-फकीरों की सेवा में खर्च करें और अपने शरीर को पाक रखें। हम लोग समझ से काम लेते तो इतनी खराबी न होती, आखिर तो जिम्मा आपके सिर मढ़ा गया। प्रजातंत्र प्रणाली का जो अधिकार था उसका भी दुरुपयोग किया। प्रजातंत्र में राजा बनाने का अधिकार आपको मिला। आप जिसको राजा बनायेंगे वह जो करेगा, भोक्ता बनोगे अपने कर्मों का भार है ही।

बाबा जी को कोई ख्वाहिश नहीं... मेहनत और ईमानदारी से काम करो, लोग कह डालेंगे कि बाबाजी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति की ख्वाहिश रखते हैं तो मुझे किसी पद की क्या ख्वाहिश होगी ? जहाँ 10 करोड़ लोग कतार लगाकर भाव के फूल चढ़ाते हों उससे बड़ा क्या पद ? अगर आराम चाहते हो तो मेहनत और ईमानदारी से काम करो फिर एक घण्टे भगवान की सच्ची पूजा करो खुदा की सच्ची इबादत करो और ग्रंथ साहब का समझकर पाठ करो। यह नहीं कि ऐसे ही कर लिया, अगर सब लोग इसमें लग जायें तो सब खामियाजा खत्म, सबके दिल पाक-साफ। आपने अपना निशाना गिरने का बना लिया है इसलिए महात्मा दौड़ेंगे। जब गिरने लगोगे तब बचायेंगे। अगर गाँधी महात्मा के साथ में महात्मा शब्द न लगा होता तो गाँधी कुछ नहीं कर सकते थे। पर महात्मा के नाम पर कब तक आप रोटी खाओगे। आपको भी महात्मा कुछ बनना है।

गोहत्या से दूर रहो

तुम्हारा राज्य किसी भी मन्दिर,
देवालय या पूजा-स्थान को न बिगाड़े।

बाबर का बसीयतनामा अपने बेटे हुमायूँ के लिए

जहीर-उद्दीन मोहम्मद बाबर बादशाह गाजी का गुप्त बसीयतनामा
शाहजादा नसीर-उद्दीन मोहम्मद हुमायूँ के नाम :

अल्लाह उसे लम्बी उम्र बख्शे

तुम को सल्तनत की दृढ़ता व संगठन के लिए लिखा जाता है :-

'ऐ मेरे बेटे ! इस हिन्दुस्तान में भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं। महान् शक्तिमान न्यायशील खुदा ने इस अखण्ड राज्य को तुम्हें सौंपा है। उसके लिए, उसको धन्यवाद दो और स्तुति करो। यह मुनासिब है कि तुम पाक दिल निर्मल मन से बिना किसी धार्मिक कट्टरता और पक्षपात के बगैर सबका उनकी रीति के मुताबिक न्याय करो।

खासकर गोहत्या (गौकसी) से दूर रहो क्योंकि वही भारतवासियों के दिलों को अपनी तरफ खींचने का तरीका है। तमाम प्रजा शाही कृपा और शुभचिन्ता के कारण हम पर श्रद्धा रखेगी। तुम्हारा राज्य किसी भी मन्दिर, देवालय या पूजा स्थान को न बिगाड़े। ऐसा इन्साफ करो कि प्रजा भी राजा से खुश रहे और बादशाह भी रियाया से खुश हो। इस्लाम की तरक्की जुल्म की तलवार की बनिस्बत एहसान के खड्ग से होना बेहतर है। शिया और सुन्नियों के झगड़ों में मत पड़ो। वह तो मुसलमानी मज़हब की कमजोरी है। प्रजा को शरीर के चारों तत्वों के समान् एक साथ इकट्ठा रखो जिससे शासन रूपी शरीर में कोई मर्ज न हो। तुम हज़रत तैमूर साहब केरानी की कीर्ति को याद रखो ताकि तुम सल्तनत की बातों में होशियार बनो। हमारा तो तुम्हें सिर्फ नसीहत देने का फर्ज है।-[1529]

गाय, पशु-पक्षी का न वध करी कोई

बदली हिन्दुस्थान तो बदली जाई दुनियाँ,
कोई न विधरमी होगा, नाहीं व्यभिचारी,
होइ जाई सफाई नाहीं रहि हैं अत्याचारी,
देशवा में होई सदाचार कै उत्थान हो ।
बदली...

छोटे-बड़े लोग जितने पद अधिकारी,
मांस-मछली, अण्डा छोड़ि होंगे शाकाहारी,
अण्डा-मछली, मांस कै न रहि हैं अब दुकान हो ।
बदली...

कोई न शराब पियी, गांजा या अफिमियाँ,
कौनू न नशीली चीज कै मिली हैं दुकनियां,
अबके शिव न पीहें न पियई हैं गाँजा-भांग हो ।
बदली...

कौनउ न हड़ताल, न आन्दोलन कोई होई
देश कै सम्पत्ती अपनी मानी सब कोई,
राष्ट्रभक्ति जागी, होगा देश यह महान हो ।
बदली...

दया धर्म, मानवधर्म, धर्म सबका होई
गाय, पशु, पक्षी का न बध करी कोई,
ऐसा होगा राज, तब होइ जाई कल्यान हो ।
बदली...

राष्ट्रभाषा संस्कृत, हिन्दी सब कोई बोली,
क्षेत्रीय भाषायें होंगी, हिन्दी की सहेली,
हिन्दी और संस्कृत में बनि जइहैं अब विधान हो ।

हिंसा से बरक्कत चली गई... ये अनमोल मनुष्य शरीर आपको अच्छे काम के लिए मिला, बुरे काम के लिए नहीं। तो अच्छा काम कीजिए। अगर आज शिक्षा मिलती होती तो देश के अन्दर में इतने मतलब यह- ये कत्ल नहीं होते। इस प्रजातंत्र में अभी तक लोगों ने रास्ता नहीं ढूँढ़ पाया और इतने कत्ल हो रहे, कोई कुछ नहीं और राजनीतिक लोग खुद कर रहे और कराते हैं और फिर भी उसमें कुछ रास्ता नहीं पाते हैं। इससे मालूम होता है--कुछ नहीं। व्यवस्था ही सब बिगड़ गई। समाज की व्यवस्था गई, धर्म की व्यवस्था गई, राज की व्यवस्था चली गई। छोटे-बड़े की व्यवस्था, परिवार की व्यवस्था बर्बाद। अब तो रास्ता पाना कुछ और है इसलिए आप लोग अच्छे काम में, अच्छे समाज में, अच्छे व्यक्तियों में थोड़ा साथ दे दीजिए और आप शाकाहारी बन जाइये। ठीक है आपने जो कुछ किया अभी तक किया लेकिन अब शाकाहारी बन जाइये ताकि आप अपनी जीवात्मा का उत्थान, कुछ कल्याण। चौरासी से, नर्कों से इसको बचा सकें। इसी वजह से तो आपकी बरक्कत चली गई। जब आप हत्या करने लगे आदमी की, बच्चे की, बच्चियों की, स्त्रियों की, मतलब जानवरों की जब हत्या करने लगे तो आपकी बरक्कत चली गई। तो करोड़पति भी कुछ नहीं, लखपति भी कुछ नहीं, आपको पूरा पड़ता ही नहीं।

ऐसा कोई नशा मत करो जिससे बुद्धि पागल हो जाय... तो दो चीज़ है, आप लोग शाकाहारी हो जाओ, सब लोग हिन्दू-मुसलमान, छोटे-बड़े सब मनुष्य जितने भी हैं सब शाकाहारी बनो। अशुद्ध आहार कोई मत करो, एक बात। बीड़ी, तम्बाकू, हुक्कापीओ, मैने तो कभी पिया नहीं लेकिन बीड़ी, तम्बाकू आप पी

सकते हैं। जो बच्चे 20 साल के, जिन्होंने अभी तक शुरू नहीं किया है, बीड़ी, तम्बाकू, हुक्का बच्चों कभी मत पीओ। यह बुरी आदत मत डालना, जो पीते हों पीते रहो। ऐसा कोई भी हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई ऐसा कोई भी नशा मत करो कि बुद्धि पागल हो जाए। जब पागल बुद्धि हो जायेगी, तो माँ-बाप, बच्ची को गाली, देवी को गाली, पड़ोस में गाली, बड़े बुजुर्गों को गाली दोगे। तुम मारोगे, पीटोगे और तमक कर चलोगे, तो तुमको बुद्धि का होश नहीं है, गढ्ढा पड़ा पैर उसमें चला गया पैर टूट गया। फिर सिर फट गया, मर गए। क्या फायदा ऐसे नशे से ? न रामायण में कहा, न गीता में, न कुरान में, न महात्मा, न फकीर कहते हैं। यह तो कहते हैं कि अच्छा रास्ता चलो साग-सब्जी है, फल है सौ बार खाइये, सौ कपड़े रोज बदलो, अच्छे मकान में, अच्छी झोपड़ी में रहो, मना कौन करता है, गृहस्थ आश्रम में रहो। लेकिन कहते हैं कि यह है बुरी चीज ऐसा मत करो।

व्रत ले लो कि शाकाहार का पालन करेंगे... आप लोग सबके सब यह प्रतिज्ञा मन में, मन में बाहर नहीं, ये मन में धारण कर लो कि हम अपने-अपने गृहस्थ आश्रम में शाकाहार का पालन करेंगे, अपने मन में। किसी से कहने की जरूरत नहीं है। अपने मन में दृढ़ संकल्प की, हम शाकाहार का व्रत लेते हैं। शाकाहार में क्या है, बीस लोटा दूध पीओ, एक टिन घी खा जाओ, पाँच सौ सेब खाओ, अंगूर खाओ, सूखा मेवा खाओ और बोरियों की बोरियाँ अनाज खा जाओ, और आप एक हजार अच्छे से अच्छे कपड़े बनाकर के शरीर पर डाल लो यह है शाकाहार।

शाकाहार कर्म में क्या-क्या है... फिर शाकाहार में क्या है ? माँ पहचानो, बेटी पहचानो, बहन पहचानो, भाई पहचानो, पिता पहचानो, चाचा पहचानो, महात्मा पहचानो, बुजुर्ग पहचानो और फिर उसके बाद अपने से बड़ा पहचानो। शाकाहार में क्या है? बड़े-छोटों से प्रेम करें, छोटे-बड़ों का आदर करें यानी सेवा करें।

शाकाहार भोजन और शाकाहार कर्म... वह शाकाहार भोजन है, यह शाकाहार कर्म है। पानी पिला दिया, दवा दे दी, कपड़ा उठा दिए, किसी को बैठा दिया। ये शाकाहार शारीरिक कर्म। इसको मन में दृढ़ संकल्प लेकर और भूल-चूक से कोई गल्ती हो जाए तो उसकी जिम्मेदारी हमारी। कोई भूल-चूक से कोई बुरा काम बन जाए तो तुम्हारी माफी। उसकी माफी हम करा देंगे। भूल-चूक में अगर कोई गल्ती हो जाएगी, संकल्प लेने के बाद। कोई काम करते हो, परिस्थिति में फँस जाते हो, भूल हो जाती है, तो हम उसकी प्रार्थना करके माफी करा देंगे कि भूल-चूक में, यह जानते नहीं थे, इनको क्षमा कर दीजिए। तो विश्वास ऐसा है कि उस कर्म को क्षमा कर दिया जाएगा।

शाकाहार आहार के व्रत से इतने लाभ हैं... अगर इतना ही व्रत आप ले लें कि हम केवल शाकाहार आहार करेंगे तो अगले साल आप देखिएगा। 6 महीने में आप देख लीजिए। व्रत ले लीजिए कि हम शाकाहार व्रत करेंगे। दूध है, अनाज है, फल, सूखे मेवे हैं, घी है यह सब चीजें हैं इसका हम सेवन करेंगे, एक साथ व्रत लीजिए। ये शाकाहार फलाहार है, ये शरीर पोषक पुष्टदायक, मन चंगा रखता है, शरीर पुष्ट होता है, शरीर निरोगी होता है, विकार रहित होता है। लेकिन अब इसके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं कहना

चाहता। इससे भजन भी बनेगा, ध्यान भी बनेगा, मन बस में रहेगा। फिर वह है कि जब भजन पर, ध्यान पर, सुमिरन पर बैठोगे तो मन जो है वह स्थिर हो जाएगा, रुक जाएगा। फिर संकल्प भी करेगा, फिर भागेगा नहीं। इन्द्रियाँ चलायमान नहीं होगी, फिर काम नहीं जगेगा, क्रोध नहीं जागेगा और अहंकार नहीं आएगा, फिर लोभ नहीं जागेगा, फिर मोह नहीं जागेगा। कितना बड़ा लाभ हुआ ?

सारे माता-पिता चिल्ला रहे हैं...जब महात्माओं ने योग प्राप्त किया दिव्यनेत्र, ज्ञानचक्षु जब खुल गया और उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को जब देखा और सारी जीवात्माओं को जब देखा तो उन्होंने यह खोज की, ऋषियों ने की। यह जब मनुष्य शरीर मिलने का समय चौरासी लक्ष योनियों की आत्माओं का आता है तो अन्त में सर्व प्रथम गऊ और बैल की योनि दी जाती है। बैल और गऊ योनि के मरने के बाद गऊयें स्त्रियाँ तन पाती हैं और बैल पुरुष तन पाते हैं। इसलिए ऋषियों ने कहा था गऊ और बैल को भोजन-चारा देना, काम उससे लेना, लेकिन उसको मारना नहीं। वह आत्मायें जब मनुष्य शरीर में आयेंगी तो बहुत अच्छा काम करेंगी। लेकिन आपने यह बात कभी सोची, समझी नहीं। उनको कत्ल करना शुरू कर दिया और वह प्रेत योनि में चली गईं, वहाँ रोती-चिल्लाती हैं। प्रेत योनि का समय जब समाप्त हुआ तो मनुष्य तन में आईं और मनुष्य तन में आकर बच्चे-बच्चियाँ जब काम नहीं करते हैं, आज्ञा नहीं मानते हैं और सेवा? तो सारा समाज, सारा देश चिल्ला रहा, सारा परिवार, सारे माता-पिता चिल्ला रहे।

लोग आकर रोते हैं...लोग आकर रोते हैं कि बच्चे नहीं मानते, बच्चियाँ नहीं मानती। लेकिन किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा क्यों हुआ। महात्माओं ने कहा था कि गाय-बैल की सेवा करना।

ये जब अपनी मौत से मरेंगे तो गायें लड़कियाँ बनेगीं और बैल लड़के बनेंगे। ये बच्चे-बच्चियाँ समझदार होंगे, ये सेवा करेंगे लेकिन तुमने गायों को मारा, बैलों को काटा उनकी अकाल मृत्यु हुई। वे रूहें प्रेत बनीं, तड़पीं और भटकीं और समय पूरा करने पर जब मनुष्य शरीर में आईं तो ये ही लड़के-लड़कियाँ चिड़चिड़े, झगड़ालू और किसी की बात न मानने वाले हुए। अब तुम रोते हो।

देवियों से झगड़ा मत करो...देखो! मेरी बात को बड़े ध्यान से सुनो। घर में लक्ष्मी रहती है। लक्ष्मी समझते हो ? देवी। जब दोनों पति और पत्नी प्रेम से रहेंगे तो लक्ष्मी की वर्षा होगी और दोनों लोग झगड़ा करेंगे तो डायन का निवास होगा। लक्ष्मी चली जाएगी। तो जिस घर में भूतिन प्रवेश हो जाए तो वहाँ पति और पत्नी में क्या होने वाला है? तो घर में मेल-जोल, मोहब्बत, प्यार से रहो और कोई आदमी अपनी देवियों को मारे नहीं। देवियों के ऊपर हाथ-पैर नहीं चलाना चाहिए। यह माया का रूप है, इससे काम ले लो होशियारी और चतुराई से। और यदि तुम काम नहीं ले सके तो समझ लो तुम्हारे लिए आफत खड़ी है। ये तो वैसे ही माया, जड़ इन्हें घेरे हुए है, फिर जड़ और चेतन घेर ले तो फिर जीव क्या करेगा ? इसीलिए घर में मेल-जोल से रहो। मुहब्बत-प्यार से रहो। तो देवियों से लड़ाई-झगड़ा करने से न कुछ मिला, न मिलेगा।

देवियों की हमेशा इज्जत करो...देवियों की आप इज्जत कीजिए, सम्मान कीजिए, लक्ष्मी समझिए, वीर पैदा कीजिए, धर्मात्मा पैदा कीजिए, त्यागी पैदा कीजिए, सत्यवादी पैदा कीजिए। ये शिक्षायें देना शुरू कर दीजिए, काम बन जाएगा। ये शिक्षायें छूट जायेंगी तो बर्बाद हो जायेंगे आप। सब कुछ बर्बाद हो जाएगा। ऐसा काम मत करें। बाबाजी सब सीधी-साधी आपको शिक्षा दे रहे हैं।

मासिक धर्म के समय परहेज़ करें... घर में जब देवियाँ महीना रहती हैं तो हम लोग छूते नहीं हैं। क्योंकि घोर बीमारी लग सकती हैं। उनसे कहा जाता है एकान्त में बैठो और चार दिन तक जब निकल जाते हैं तब ही आने देते हैं। उसके पहले खाने-पीने की वस्तुऐं छूने नहीं देते हैं। इतना परहेज़ तो आपको करना ही पड़ेगा। जब से आपने यह परहेज़ बन्द कर दिया तब से फसाद आपके ऊपर हावी हो गए। यह परहेज़ आप करोगे फिर आप देखो। मुर्गियों के अण्डे जो सेवन करेंगे तो वे बचेंगे नहीं, अवश्य बीमार पड़ जायेंगे। जानवरों में भी कैंसर होता है, उनमें भी तकलीफ होती है, उनमें भी बुखार होता है, उनमें भी कोढ़ होता है और उन्हीं को आप सेवन करो तो आप कैसे बच सकते हैं? मैं कोई अनर्गल बात नहीं करता जो सिद्ध है, सत्य है, जिनमें कोई मिलावट नहीं है वही बात आपको बता रहा हूँ। पशु मिल जाए, पक्षी मिल जाए, जो मिल जाए उसी का माँस खाने लगे। मनुष्य जैसी देह पाकर यही मनुष्य हैवानों से भी नीचे चला गया तो फिर क्या किया जाएगा ? दवाओं की जो फैक्ट्रियाँ हैं वे सभी जवाब दे जायेंगी। दवा काम नहीं करती। दवा काम करे मगर ला-इलाज मर्ज हो गया क्योंकि इस दवा का उस पर कोई असर नहीं। ये मातायें अपनी छोटी-छोटी बच्चियों को छोटेपन में ही ट्रेनिंग देकर मनुष्य बना देती थीं।

नाजायज़ धन कोढ़ के समान... तुमने जो धन इकट्ठा किया वह कोढ़ है। मेहनत और ईमानदारी से इकट्ठा नहीं किया। ये कोढ़ फूलेगा-फलेगा नहीं, तुम्हारे पास का भी खींचकर ले जाएगा। तुम सोचते हो कि हम इसका उपयोग करेंगे तो तुम भोग नहीं सकोगे। हवाई जहाज में बैठे रहोगे, मोटर में बैठे रहोगे अचानक वह दबोच लेगा, तुम्हें बोलने का मौका नहीं देगा। तुम ये भी नहीं बता सकोगे कि तुमने कहाँ-कहाँ इकट्ठा करके रखा है। जब सिर पर चोट पड़ती है तब अकल आती है। कुदरत बौखलाई हुई है। वह ऐसा ठोकर मारेगी कि सबके होश ठिकाने लग जायेंगे।

परम् पूज्य स्वामी जी महाराज सत्संग में 'नामदान' देते समय
भजन करने की विधि समझाते हुए, भजन की मुद्रा में

भजन करोगे तो बरक्कत मिलेगी... मोटा मिले तो मोटा खाओ, मोटा मिले मोटा पहनो। मेहनत करना अपना फर्ज है, अपना कर्तव्य है, मेहनत करो। उससे उपार्जन करो आप जो कुछ भी कर सकते हो, थोड़ा भगवान का भजन, तो बरक्कत हो जाएगी। जब बरक्कत हो जायेगी तो मजदूरी में पूरा पड़ेगा, खेती में पूरा पड़ जायेगा, दुकान में पूरा पड़ेगा, नौकरी करते होंगे तो उससे पूरा हो जायेगा। लेकिन भगवान का भजन नहीं करोगे तो बरक्कत आपकी चली जाएगी। कभी पूरा पड़ने वाला नहीं, दूसरे का जबरदस्ती ले लोगे तो बरक्कत नहीं मिलेगी। परेशानी तो इस बात की है पूरा ही नहीं पड़ता है। जिसके पास नहीं वही रो रहा है तो रास्ता छूट गया बरक्कत का और बरक्कत घर से ही निकल गई।यह तो बड़ी सौगात थी,

व्यर्थ यानी जो पैसा लगेगा, काश्तकार को देना। ये जितनी मंहगाई, जितने टैक्स लगते हैं, सब हमारे काश्तकारों को देना पड़ता है। और हमारे काश्तकारों की आबादी है एक अरब, साठ करोड़। जब इतनी बड़ी आबादी की जनसंख्या, तो बाजार में सामान खरीदने जाओ तो काश्तकारों तुमको सब देना है, दूसरा कोई नहीं देता।

सब मंहगाई की मार काश्तकार पर ही पड़ती है... दो अरब की जनगणना जब हो जायेगी तब बजट बनेगा तो साल भर का होगा। दो महीने, छह महीने में खत्म होने वाला नहीं, सब पूरा पड़ेगा साल भर। आमदनी होगी, उस आमदनी पर तब बजट। अभी तो कोई आमदनी होने वाली नहीं। तो बच्चा! ये तुमको देना पड़ेगा। ये तुम सोचो कि आगे कितनी तकलीफ आने वाली है। वह आप अच्छी तरह से समझ लो और एक पैसा जनगणना में खर्चा नहीं होगा। एक भी नया पैसा नहीं खर्च होगा। जब हमारे चुने हुए ग्राम प्रधान उनको, डी. एम. आदेश दे दे 370 जिलों में कि हर ग्राम प्रधान अपने गांव की जनगणना, जितने बच्चे-बच्चियां, जितने जवान देवियां और पुरुष हैं, इन सबकी कर लो और वोटर लिस्ट अपने गांव की बना लो। एक नया भी पैसा हिन्दुस्तान की जनगणना पर खर्च नहीं होगा। और गांव में लिस्ट टंग जायेगी कि इतनी गांव की आबादी है, कितने मर गये, कितने जिन्दा हैं, आप घटाते चले जाओ। लिस्ट टंगी हुई है बराबर देखते जाओ। इतने चले गये, इतने आ गये। लेकिन जब तक यह नहीं करोगे बच्चा! तब तक देश का भला होने वाला नहीं खत्म हो गया। अभी क्या? सौ का दो सौ, तीन सौ, चार सौ यानी सौ का चार सौ में बिकेगा। जो सौ रुपये की चीज वह चार सौ में बिकेगी, चार रुपये की चीज बीस रुपये में, बीस रुपये की चीज सौ रुपये में। अभी आपको पता नहीं है, अभी आप कुछ जानते ही नहीं।

मैं बुराइयों का विरोधी हूँ राज्य का विरोधी नहीं... देखो अधिकारियों! मैं राज्य का विरोधी नहीं। राज्य एक नियम है, राज्य एक व्यवस्था है, राज्य एक मर्यादा है। उसका पालन, मैं पालन करता हूँ। नियम को मानता हूँ, अधिकारियों की व्यवस्था को मानता हूँ। उस मर्यादा को मानता हूँ। मैं उसका उल्लंघन नहीं करता हूँ। लेकिन मैं बुराइयों का विरोधी हूँ जिसके कृष्ण विरोधी थे, जिसके राम विरोधी थे, शंकराचार्य विरोधी थे, मुहम्मद विरोधी थे, महाबीर विरोधी थे। बाबा जी को भी सभी बुराइयों का विरोधी समझ लीजिए कि कट्टर बुराइयों के विरोधी रहेंगे। अच्छाइयों के समर्थक और बुराइयों के विरोधी। यह दिल्ली के लोगों को सुना दीजिए बाबा जी राज्य के विरोधी नहीं हैं, बुराइयों के विरोधी हैं। जिस दिन बुराई आप छोड दें, बाबा जी अपना शब्द वापस ले लें और अपने धर्म-कर्म के प्रचार में लग जायें। हमको कोई जरूरत नहीं है।

बुराई छोड़ो नहीं तो निकाल कर बाहर करेंगे। नहीं तो यही बाबा जी आपको निकालकर बाहर कर देंगे। ये सब प्रेमी बैठे हुये हैं ये निकाल कर बाहर कर देंगे। आप और हम देखते रहेंगे। आपका और हमारा साथ अन्ततोगत्वा एक ही रह जायेगा। यह दुनियां तमाशा देखती रह जायेगी। यह सब कुछ होगा। लेकिन समय से होगा और सब कुछ देखने को मिलेगा। यह सब आप लोग समझ लीजिए।

बाबा जी बुराई छुड़ाने की शिक्षा देते हैं उन्हें राजनीति से क्या काम? बाबा जी की बात बड़े ध्यान से, निष्पक्ष। बाबा जी किसी का पक्ष नहीं करते क्योंकि बाबा जी राजनीतिक नहीं हैं। ये सब आकर के रोते हैं, हमारे साधन-भजन में बाधा, जब बाधा पड़ती है तब फिर मैं इनको चरित्रवान और अच्छी शिक्षा देता हूँ।

जन-जन से सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा चली गई। झूठ, फरेब, चोरी बेईमानी आ गई। मां बेटी का ख्याल नहीं रहा। लोग खुदगर्जी में लग गये धन की इतनी इच्छा है कि थैली पूरी होती नहीं। यह हाल हो गया।

यह कैसे हो गया आप से न्याय अली हो गाँधी।
राज धर्महीनों को देकर अपने लिये समाधी॥

आगे-पीछे अपनी करनी का फल भोगै का परी।
न्याय का गला घोंटने वालों को भी, रोवै का परी॥

तप से चूके राज मिलत है, राज के चूके नरका।
जैसा करम करे सो भोगै, इसमें पड़े न फरका॥
मानव देह धरे के बंधन में, बंधावै का परी॥

राजा रावण, कंस और दुर्योधन से अभिमानी।
राजा दशरथ, पाँचों पाण्डव, धीर-बीर विज्ञानी॥
गर में पड़ी सभी के कर्म भोग की मोटी रसरी॥

हिन्दू गए हिन्दुआई करके, तुरक गए तुरकाई।
इसके बाद डेढ़ सौ वर्षों तक किए राज इसाई॥
भारत किए स्वतंत्र सुभाष औ गाँधी जी प्रहरी॥

यह कैसे हो गया आपसे न्याय अली हो गाँधी।
राज धर्महीनों को देकर अपने लिए समाधी॥
भारत धर्म रहित हो गया प्रजा दुःख भोगै सगरी॥

जनता को भोजन, कपड़ा आवास नहीं मिल पाता।
नेता जन दावतें उड़ाते, धर्म-कर्म नहीं आता॥
जनता रोवै, नेता मौज लेंय बनवावैं बखरी॥

धर्म, संस्कृति सेवा भक्ती, हुए प्रेम से खाली।
माता-पिता, श्रेष्ठजनों को लड़के देवै गाली॥
नेताजन जो बोवैं मतदानिन को काटै का परी॥

आगे पीछे अपनी करनी का फल भोगै का परी।
न्याय का गला घोंटने वालों को भी रोवे का परी॥

राजा, जमींदार, जागीरदार सबको प्यार करते थे

बाबा जयगुरुदेव ने सही इतिहास याद दिलाया, राजा, जमींदार, जागीरदार इतना क्रोध नहीं करते थे। जनता-किसी भी जाति की हो सबको प्यार करते थे। राज के छोटे-बड़े मिनिस्टिर इतने क्रोध में बदला लेते हैं और इतना जिद्दी-हठी होते हैं, सच्ची बात मानना-सुनना ही नहीं चाहते। प्रजातन्त्र में इनका क्रोध मानवता, प्रजातन्त्र के लिए घातक है।

धर्म ही मनुष्य है। अधर्म ही मनुष्य पशु है। धर्म, राजनीति में सदैव आगे रहे। राजनीति मानव संचालित एक व्यवस्था है। लोक सभा-कार्यरूप देने वाली एक प्रणाली है। शासक, अधिकारी- कर्मचारी हैं। प्रधानमंत्री देखें हमारी बनाई व्यवस्था कार्यरूप दे रही है या नहीं। राजनीति मानव संचालित एक व्यवस्था- शासकों को काम न करने दे तो सारे देश का मानव भ्रष्ट होकर प्रजातान्त्रिक प्रणाली खो देगा।

प्रीवीपर्स खत्म किया, यह वादा खिलाफी है.... जब देश आजाद हुआ तो आपने राजे-महाराजों से वादा किया था कि हम आपको प्रीवीपर्स देंगे, आपके गुजारे के लिए और आपकी सुरक्षा के लिए कुछ फौज-फाटे दे देंगे। लेकिन प्रीवीपर्स बन्द कर दिया यह अच्छा नहीं किया, ये वादाखिलाफी की। इन धोखेबाजों और बेईमानों ने अपने स्वार्थ में आकर उनके साथ धोखा किया।

देश में छोटी-बड़ी राजाओं की रियासतें थीं, अंग्रेजों के अन्तर्गत रहते हुए सभी राज स्वतंत्र थे। इन राजाओं की रियासतों में हिन्दू, मुसलमान अन्य जातियाँ सभी हिल-मिलकर अनुशासन में रहती थीं। कत्ल होते ही नहीं थे। डकैतियाँ भी नहीं होती थीं। चोरी की बात तो छोड़ दीजिए। सन 1936 में एक रुपये का पाँच सेर घी मिलता था। आखिर इन राजाओं ने अपनी रियासतों के किसी भी मुसलमान को अपनी रियासत से नहीं निकाला। बल्कि हिन्दू राजाओं ने अन्य जगह के रहने वाले मुसलमानों को अपनी रियासतों में बसाया। कचहरी खाली पड़ी रहती थी। आखिर इन्सान तो इस वक्त भी थे। जहाँ तक विदेशी हुकूमत को निकालने की बात थी वहाँ तक तो सभी लोग सहमत थे। लोगों ने सोचा कि विदेशी चले जायेंगे, अपने लोगों का शासन बहुत ही स्वच्छ और बहुत धर्मयुक्त होगा। सभी लोग भौतिक वस्तुओं से शरीर की रक्षा के लिए भरपूर होंगे। दिन में काम करेंगे, सुबह-शाम बाल-बच्चों की सेवा करेंगे और सुबह-शाम भगवान का भजन और इबादत भी करेंगे। रात्रि में बेफिक्र होकर सोयेंगे।

आजादी में मंहगाई और टैक्स ने जनता को उधेड़ डाला...
देश आजाद हुआ विदेशी चले गए, रियासतें खत्म हुईं। जमींदारियाँ चली गईं, काश्तकारों की जमीन बँट गई। चोरी, डकैतियाँ रात-दिन, दिन-दहाड़े होने लगीं, कत्ल आम अधिकारियों के सामने होने लगे। मँहगाई और टैक्सों ने जनता को उधेड़ डाला। और अब यहाँ तक सब लोग आ गए, फौज के लड़ाकू सामान इकट्ठा कर, सरे आम पुलिस-फौजियों अधिकारियों से लड़ने लगे। चालीस वर्षों में अनगिनत निर्दोष लोगों की जानें चली गईं। इन सबका जिम्मेदार कौन ?

अब आप सोचो कि कौन सा तंत्र ठीक है ?... जो लोकसभा में धर्म निरपेक्षता की दुहाई देते हैं और लोकतंत्र के हामीकार और एकता-अखण्डता के प्रतिज्ञाकारी हर मिनिस्टर हर महीने चिल्लाता है कि अब सबको न्याय-सुरक्षा दिया जाएगा, नौकरी, रोटी, काम की व्यवस्था की जाएगी, टैक्स, मँहगाई अब नहीं बढ़ेंगे। अब वही मिनिस्टर अपने वक्तव्यों से जोरदार भाषण देते हैं कि सख्ती से निपटा जाएगा और बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है और घबराओ मत, चोरी-डकैती और कत्ल नहीं होगा।अब बढ़ गए तो बढ़ गए अब मंहगाई, टैक्स नहीं बढ़ेंगे। देश की एकता-अखण्डता के लिए बहुत संकल्प है, देश के टुकड़े नहीं होने देंगे। धर्म निरपेक्ष हमारा देश है। अब मिनिस्टरों की असत्य नीति यह हो गई। चोरी बढ़ गई, टैक्स बढ़ गए, आन्दोलन बढ़ गया, हड़ताल बढ़ गया, तोड़फोड़ बढ़ गया। अब मिनिस्टरों के लच्छेदार भाषण, साम्प्रदायिकता बर्दाश्त नहीं की जा सकती। यह सब घटनायें साम्प्रदायिक लोग करा रहे हैं। देश का माहौल मिनिस्टरों के द्वारा यहाँ लाकर गिरा दिया गया। ये पेशेवर राजनीतिक जनता के लिए अत्यन्त घातक हैं। घातक ही नहीं काटने

वाली तलवार हैं। पेशेवर राजनीतिक लोगों के द्वारा धन, जन, बल, बुद्धि सब कुछ जनता का लुट जायेगा। जनता निराश अकेली रह जायेगी। देश की आम जनता पेशेवर राजनैतिक लोगों के चंगुल से निकल भगे। जैसे हरहरी गाय लोगों की आवाज सुनते ही खुलकर भागती है फिर उसे कोई नहीं पकड़ सकता।

ऐ भारत की जनता ! अब भी बाबा जी की बात समझ लो। पेशेवर राजनैतिक लोग जनता को खेती की तरह से रख रहे हैं। वह अगर तुझे पकड़ लिया तो कांजी हाऊस में ही बन्द कर देंगे।

अब आप लोग खुद सोचो कि प्रजातंत्र ठीक है, कि राजतंत्र ठीक है, या विदेशी तंत्र ठीक है, या धर्मतंत्र ठीक है। यह सबको विचार करना पड़ेगा।

यह बहुमत हिन्दुस्तान का सर्वनाशकारी है...यह वर्तमान के हिन्दुस्तान का बहुमत जो है वह सर्वनाशकारी, सबका नाश कर देगा। धर्म का नाश, सत्य का नाश, न्याय का नाश, प्रेम का नाश, इसका नाश, छोटों का नाश, बड़ों का नाश, मान का नाश, मर्यादा का नाश, कीर्ति का नाश सबका जड़ से मूल से नाश कर देगा, खत्म कर देगा। इसको कहते हैं बहुमत। इसी बहुमत को आप कहते हो प्रजातंत्र।

बहुमत में अकलमन्द बेकार हो गए...तो मान लीजिए एक अकलमन्द हो और 100 बेअकल और 100 का बहुमत हो तो एक क्या करेगा ? अगर मान लीजिए कि 50-50 हैं और एक 51 हो गया, और बाकी 49 रह गए तो बहुमत उनका हो गया। तो अकलमन्द मारे गए। अब तो अकल का मतलब ये है कि बहुमत। तो वह क्या करेगा, कुछ नहीं कर सकते।

अब त्यागियों की जरूरत है...अब यह किया कैसे जा सकेगा इसको तो सोचना चाहिए। अब तो देश को सच्चे लोगों की जरूरत है, विवेकशील लोगों की जरूरत है, अब त्यागियों की जरूरत है, वास्तव में देशभक्तों की अब जरूरत है और जनता सेवियों की अब जरूरत है।

अगर ऐसे लोग आ जायें तो सबको न्याय और सुरक्षा मिल जाए। तकलीफ़ किसी को, अंग्रेजों के वक्त में यह देखा जा रहा था और देखा गया उनके यहाँ कहीं चोरी और डकैती हो गई तो फौरन जिले के सब अधिकारी वहाँ पहुंच गये, चौरी और डकैती नहीं होती थी। हम लोगों ने तो खुद देखा और पूरा उसका अनुभव किया। लेकिन अब क्या पूछना, कुछ नहीं, कोई दिशा, मतलब है समझ और बूझ या रास्ता किसी भी तरह का नहीं, सब बर्बाद हो गया। इसलिए कल मैंने कहा था क्षत्रियो अपनी खानदानियत को अपना लो। लोग क्षत्रियों का नाम लेना बंद कर देंगे। यह कहेंगे कि सब शूद्र हो गये। इसी तरह से ब्राह्मणों को भी ऐसे शब्द से सम्बोधित करेंगे, जो इनसे भी गए-गुजरे।

अब प्रजातंत्र में किसी की कोई जिम्मेदारी नहीं...तो आप लोग सोच लो अच्छी तरह से कि प्रजातंत्र भारत में अब स्थापित हुआ है। आपने तो कहा था राजतंत्र बहुत ही खराब है। राजतंत्र जुलुम-जोर करता है, वह तो जूलुम-जोर कुछ नहीं करता था। न चोरी होती थी, न डकैती होती थी, न कत्ल होता था। लेकिन प्रजातंत्र ऐसा आया कि किसी की जिम्मेदारी नहीं। बनने को कहते हैं हम मंत्री हैं लेकिन जिम्मेदारी किसी की भी नहीं। कोई जिम्मेदार नहीं। और कोई आपको अपना नहीं बनाता। किसी से कोई गरज नहीं, फिर जब जिम्मेदारी किसी की नहीं तो न्याय किसको मिले और रक्षा किसकी हो ? तो प्रजातंत्र इस समय 42 साल में उसको लीप-पोत के सर्वनाश कर दिया और राजतंत्र को गड्ढे में डाल दिया। तो तुमने कभी रामायण नहीं पढ़ी कि :-

बहुमत, तियमत, बालमत, बिन नरेश को राज,
सुख सम्पदा की कौन कहे, प्राण बचावन बड़ भाग।

अरे, सम्पदा नष्ट हो जाए, खेती चली जाए, दुकान चली जाए, कारखाना चला जाए, सोना-चांदी सब चला जाए लेकिन अगर प्राणों की रक्षा आपकी हो जाए तो इस बहुमत में आप अपना भाग समझिए, ये बहुमत है।

फिर यह तो नहीं कहोगे कि बाबा जी आपने क्यों नहीं बताया?

व्यवस्था बदलने पर सुख-शान्ति मिलेगी...आप लोग अपनी-अपनी जगह पर आओ और जो अपनी प्राचीन जो ऋषियों-मुनियों ने बड़ी-बड़ी मेहनत की और एक व्यवस्था का निर्माण सुख-शान्ति के लिए और आत्म कल्याण के लिए किया था उसी के अंतर्गत चलो, सब भौतिक सामग्रियाँ-सोना, चांदी, जवाहरात, कपड़ा, खाना, अनाज, फल और फूल सब आपको प्रदान हो जाएगा। आप और आपके बाल-बच्चों के लिए। और आप नहीं सोचो वह तो आगे आने वाला है। तकलीफ तो आगे आने वाली है। फिर यह तो नहीं कहोगे कि बाबा जी आपने यह क्यों नहीं बताया ? इसलिए मैं तो आपको थोड़ा सा कुछ बताता हूँ। तो दशा, देश में देशव्यापी हो गई है आपको भी कहने-सुनने से अहसास होने लगा इस समय बड़ा उलझा हुआ और खतरनाक है।

काऊंटर कर दिए जाते हैं उनको मत करो...इसलिए परिवर्तन होगा। भारी परिवर्तन होगा। इसको आप अच्छी तरह समझो। मैं अपने अधिकारियों से निवेदन करूँगा कि आप किसी इन्सान को मत

मारो। जो चोरों के नाम, डकैती के नाम काऊंटर कर दिए जाते हैं, उनको मत मारो। क्योंकि यह अनेकों जन्मों की तपस्या और सेवा, दान-पुण्य के बाद में कभी सौभाग्य से यह मनुष्य शरीर मिल गया और यह अगर बेकार चला गया ? उस आत्म कल्याण के लिए मिला। और कहीं बेकार चला गया और कहीं तुमने धोखे में कोई हत्या की, विनाश इन्सानियत का कर दिया तो कितना बड़ा वह जुर्म होगा कि तुम उसका अन्दाज नहीं कर सकते हो। उसके लिए उसने दोज़ख बनाए, उसके लिए उसने पूर्ण नर्क बनाए। फिर उसने फरिश्तों को पैदा किया, जमदूतों को और वह किस तरह से फरिश्ते सजा देते उसके हुक्म के बाद। जब यह सुना देते हैं, करोड़ों वर्षों तक इतनी सख्त सजा दी जाती है कि लाखों-करोड़ मील तक आवाज जाती है उसके रोने की, फिर उस मैदान में कोई नहीं दिखाई देता है बचाने वाला। क्या करेगी बादशाहत ? क्या करेंगे सिपाही, क्या करेंगे गोले, क्या करेगा सोना-चांदी ? जब उस मैदान में कोई भी दिखाई नहीं देता। बड़े-बड़े बादशाह पीटे जा रहे हैं और अभी कितने करोड़ों वर्षों तक पीटे जायेंगे, इससे क्या फायदा ?

रास्ता बदल दो...तो इसलिए इस काम को बन्द करो। रास्ता बदल दो, दृष्टि बदल दो, नियम बदल दो, क्या जरूरत है लकीर के फकीर बने रहो ? इससे नहीं काम होगा। जो रास्ता तुमने पहले से बना लिया उसमें नहीं काम होगा। नया रास्ता बना लो उसी पर तुम चल पड़ो। औरों को भी चला दो, सब बदल जायेंगे, बुरे काम बदल जायेंगे, बुरी आँखें और बुरे कान बदल जायेंगे, अच्छे हो जायेंगे। मेहनत तो आप लोगों को थोड़ी बहुत करनी पड़ेगी क्योंकि आपको भी मेहनत करनी पड़ेगी और मुझे भी। और ये बेचारे भी थोड़ी बहुत मेहनत कर दें तो रहमत तो उसकी होगी। दया तो उसकी होगी।

आगे समय बहुत खराब है... आगे तुमको बड़ी तकलीफ होगी, आगे समय बड़ा खराब है। वह एक मिनट में सब मुजरा कर लेगा फिर पीछे कहोगे कि यह क्या हो गया। बाबाजी कुछ दया करो तो क्या होगा ? फिर क्या करेंगे। अच्छा, ऐन वक्त पर क्या करेंगे ? अरे! उधर से आंधी आ रही है आपसे कहा जाए आप अपनी झोंपड़ी-ओपड़ी, सामान को ठीक कर लो उधर से आंधी आ रही है, तो आप कह रहे कि, आने दीजिए। तो वह झोपड़ी भी ले जाएगी साज-सामान, अनाज सब उड़ा ले जाएगी, आप रोओगे। पीछे जब घटना होती है तब कुछ नहीं आप कर सकते हो। जब पहले से सावधान किया जाए तो सावधान हो जाओ। तो मतलब तब बच सकते हो।

पहले से सावधान होना चाहिए... तो महात्मा आने वाले समय को बताते हैं, सावधान करते हैं। तुम तो समझते नहीं कुछ भी। इस मंच पर बैठकर जो बोलेंगे वह कुछ भी एक बात झूठ होने वाली नहीं, तुम देखते रहो, अनुभव करते रहो।

आपकी आवाज फैल रही है... एक आदमी चिल्लाता हो उसके साथ एक करोड़, फिर दस करोड़ आदमी चिल्लाते हों तो कोई बात जरूर है। अगर आप नहीं मानोगे तो एक लप्पड़ मारते ही आप साफ हो जाओगे। मैं ऐसा समझता हूँ कि पंजाब और हरियाणा में समय दे दूं तो इसकी बौछार बंगाल तक पहुँच जाएगी। इस जमीन में ऐसे कुछ गुण हैं जिसे महात्मा ही समझते हैं। वैसे आप अपरिचित नहीं हो फिर भी समय दे दूं तो परिचय हो जाएगा।

परिवर्तन की जो अगवानी करता है, उसका नाम होता है... ये बात मैं आपके कान में डाल करके जाता हूँ और वह आप लोग सबके सब तैयारी करो। परिवर्तन की जो अगवानी करता है, स्वागत करता है, उनमें योगदान देता है, उनमें सेवा करता है, उसमें कष्ट सहन करता है, उसका नाम होता है, उसकी कीर्ति होती है, उसको मोक्ष मिलता है, उसका आवागमन छूट जाता है। लोग संसार में उसके गुणगान गाते हैं। लेकिन आप डर जाओगे तो कैसे काम चलेगा ?

कलयुग कर्जा मांगेगा... इसलिए हमारे नर-नारियों, बच्चे-बच्चियों, हिन्दू-मुसलमानों! सही सच्ची बात तो यह है कि एक परिवर्तन होना है, और वह परिवर्तन का संकेत क्या है कि कलयुग में कलयुग जाएगा और कलयुग में सतयुग आएगा। अभी तो कलयुग नहीं गया जब जाने लगेगा तो उसका जो भी आपके ऊपर कर्जा होगा, वह चुपचाप नहीं जाएगा, कर्जा आपसे मांगेगा। वह कर्जा आपके ऊपर क्या होगा ? कि आपने कितना झूठ बोला, कितना धोखा दिया, बेईमानी की, कितने जानवर मारे, कितने पंछी मारे, कितने आदमी आपने मारे और कितनी आपने चोरियाँ-डकैतियाँ की। यह सब कर्म कर्जा होते हैं। आपने अपने ऊपर में जमा करके लाद लिया। अब इतना बोझा, पहाड़ की तरह से बन कर लद गया है कि बस उसके लिए बयान और वर्णन नहीं किया जा सकता।

बीसों करोड़ का वारा-न्यारा हो जाएगा... जब वह जाने लगेगा तो वह कहेगा कि भाई! हमको हमारा कर्जा दे दो, हम तो अब जा रहे हैं। आप कहोगे कि मैं तो नहीं दे पाऊँगा तो वह क्रोधित हो जाएगा गुस्से में और जोर से लप्पड़ मारेगा। इतनी जोर से मारेगा कि

बीसों करोड़ आदमी इस मिट्टी में देखते-देखते लापता हो जायेंगे, फिर भागेगा। इधर भागेगा जोर से, उधर सतयुग आता होगा तो दोनों की टक्कर हो जाएगी। बीच में जो दब जायेंगे चक्की के पाट में वे चकनाचूर हो जायेंगे।

सभी धर्म पुस्तकों में एक ही बात लिखी है...मोहम्मद क्यों आए यह मुसलमानों को सोचना है। राम क्यों आए यह हिन्दुओं को सोचना है। ईसा क्यों आए यह ईसाईयों को सोचना है। तीनों मजहबों की किताबों में पुस्तकों में क्या लिखा हुआ है ? हर धर्म के लोग, हर जाति के लोग अपने-अपने मानव इन्सानी कामों से दूर हो जाते हैं, मानव धर्म से दूर चले जाते हैं या जानवर या पशुओं जैसा मनुष्यों, इन्सानों का काम होने लगता है तो क्या होता है ? उसको बड़े ध्यान से सुनें।

एक फकीर खुदा का पैगाम लेकर जमीन पर उतरेगा...धर्म की स्थापना हकीकत को बताने के लिए कोई न कोई आपके सामने हर समय आया। मुसलमानों की किताबों में लिखा है कि जब मुसलमान भाई मजहब, ईमान अपनी हकीकत से जब दूर हो जायेंगे तो चौदहवीं सदी के अंत में एक फकीर खुदा का पैगाम लेकर जमीन पर उतरेगा और सारी इन्सान जाति को इन्सानियत का, हकीकत का पैगाम सुनायेगा। कुरान में क्या लिखा हुआ है, यह वह फकीर सबको पैगाम खुदा का सुनायेगा। उन किताबों में लिखा हुआ है हजारों वर्ष पहले और ऐसा मालूम होता है कि फकीर हजारों वर्ष पहले की चीज को देखते हैं जैसे अभी दिखाई देती हो। उन्होंने लिखा है कि जब वह फकीर खुदा का पैगाम इन्सानों को सुनाने का काम शुरू करेगा उस समय हिन्दुस्तान की गाँव-गाँव की सभी सड़कें काली हो जायेंगी। हजारों वर्ष पहले जब तारकोल का नाम भी किताबों में नहीं था उस समय फकीर ने लिखा कि गाँव-गाँव की सड़कें काली हो जायेंगी।

क्या कभी आपको इस तरह हकीकत का पता था? ईसाईयों की किताबों में लिखा है कि मैं उतर आऊँगा जमीन पर, अभी तो मुझको सूली पर चढ़ा दिया है मैं जा रहा हूँ बाप के पास और दोबारा फिर आऊँगा। तुम लोग इबादत करते रहना और गरीबों की सेवा करते रहना।

धर्म की स्थापना के लिए अवतार आते हैं...हिन्दुओं की किताबों में लिखा है कि जब धर्म लोप हो जाएगा, सत्य, प्रेम और न्याय से लोग दूर हो जायेंगे, लोगों के हृदय में दया नहीं रहेगी, अपने ऊपर, महात्माओं पर, किताबों पर कोई विश्वास नहीं रहेगा और भगवान का भी विश्वास खो बैठेंगे, ऐसी अवस्था में भारत की भूमि पर एक महान् आत्मा का जन्म होगा।

कर्म धर्म तराजू के दो पलड़े... कर्म, धर्म ये तराजू के दो पलड़े हैं। एक पलड़े से तोलाई नहीं हो सकती। तुम कर्म से गिरे तो धर्म ने ठीक कर दिया, धर्म से गिरे तो कर्म ने ठीक कर दिया। पहले इन दोनों का बराबर जोड़ा चलता था। पति-पत्नी का, पिता-पुत्र का, राजा-प्रजा का, विद्यार्थी अध्यापक का जोड़ा होता है। इस जोड़े को ठीक करें। यही कर्म धर्म आत्मा-परमात्मा अच्छे बुरे का तराजू अपने बैलेन्श को पूरा करते थे। परन्तु आज धर्म गया, कर्म गया तो पाप बढ़ गये, विषम भोगों और इन्द्रियों की पूर्ति रह गई। रामायण गीता आप जानते नही। किताबों की दुकानों में अंडे टंगे रहते हैं। अगर तुम दस दिन घास पीसकर पी लो तो देखो कितनी ताकत आती है। लोग कहते हैं कि एक अंडे में एक सेर दूध की ताकत है। परन्तु आप हाथी, बैल वगैरह को देखो ये शाकाहारी हैं इनमें कितनी ताकत है। ये शाकाहारी हैं। पहले शाकाहार से धर्म का कर्म का और ईश्वर का नाम होता था। मांसाहार ने सारे देश को बर्बाद कर दिया। सारी दुनिया में हाहाकार छा गया , लोग त्राहि त्राहि करने लगे।

देश के उद्योगपतियों को सुविधा देकर अपने उद्योग बढ़ाओ... ऐ बुद्धिजीवियों, छात्रों! आप इस पर बड़ी गंभीरता से सोचो। अभी समय है, अगर चूक गए तो फिर समय नहीं मिलेगा। फिर ये मत कहना कि मुझे किसी ने आगाह नहीं किया था। तुम विदेशी उद्योगपतियों को सुविधा दे रहे हो, अगर तुम अपने यहाँ के उद्योगपतियों को सारी सुविधा दे दो और उनसे ये कहो कि तुम अपनी पूंजी लगाकर अपना उद्योग बढ़ाओ। तुमसे कोई पूछताछ नहीं होगी कि तुम कहाँ से रुपया लाये और तुम इस जनशक्ति का उपयोग कर लो। फिर ये ही हमारे देश के उद्योगपति इस जनशक्ति को साथ लेकर इतना विकास भी कर देंगे और सारा विदेशी कर्जा मय ब्याज के वापस भी कर देंगे। भारत देश सब देशों से दस-बारह ही सालों में सम्पन्न हो जाएगा। विश्व के सारे देश इससे पीछे हो जायेंगे।

तुम्हारा नाम लाखों वर्ष तक होगा... इसलिए हिन्दुस्तान के प्रेमियों! अरे तुम्हारा नाम आज नहीं होगा। राम के वक्त में केवल दो-चार आदमियों का नाम किताबों में आता है। लेकिन तुम्हारा कितनों का नाम, कितने हजारों-लाखों वर्षों तक इस पृथ्वी पर चलता रहेगा। यह कलयुग में सतयुग आगवन का ढिंढोरा जो भारतवर्ष में पिट रहा।

आपने न माना तो नई क्रांति उत्पन्न होगी... अगर आपने मेरी बात, प्रार्थना नहीं सुनी तो हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाईयों में एक क्रांति, जिसको कहते हैं वैचारिक क्रांति, उसमें आन्दोलन नहीं, हड़ताल नहीं, उसमें तोड़फोड़ नहीं, लेकिन वैचारिक क्रांति में सारी जनता सड़क पर एक जगह खड़ी हो जाएगी और आप अलग हो जाओगे तो क्या होगा ? अगर तुम एक तरफ खड़े हो गए तो क्या कुछ नहीं। यह तो वक्त और समय बताएगा। इसको कोई रोक नहीं सकता।

परम् पूज्य स्वामी जी महाराज श्रद्धालुओं को दर्शन देते हुए सत्संग मंच की तरफ अग्रसर

सिर्फ दायीं ओर का जन समुदाय नजर आ रहा है। बायीं ओर का जन समुदाय फोटो में नहीं समाया है। अंदाज लगा लीजिये।

मेरी भविष्यवाणियां.. अब आप मेरी भविष्य वाणियाँ सुनें। सन् 70, 71, 72 इन तीन वर्षों में विश्व के विनाश का कारण बनेगा। इसके बाद आप कार्य देखेंगे। पहला नरसंहार पूरब में होगा, दूसरा नरसंहार पश्चिम में होगा, तीसरा नरसंहार उत्तर में होगा और चौथा दक्षिण में होगा। इसके बाद चारों तरफ होगा। मैं कट्टर हिन्दू हूँ। मेरी कट्टरता कम लोगों में है। मैं बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गाँजा, भांग, चरस, अफीम आदि का प्रयोग नहीं करता हूँ। मांस, मछली नहीं खाता। किसी भी व्यक्ति या संस्था की निन्दा नहीं करता। मैं कट्टर हिन्दू हूँ। परन्तु मैं मुसलमानों का पक्का दोस्त भी हूँ। मुसलमानों! पूरब और पश्चिम का पाकिस्तान खत्म हो जाएगा। आप पाकिस्तान का ख्वाब न देखें। भारत की मिट्टी, हवा, पानी में पले हिन्दू, मुसलमान, काशी, मथुरा, अयोध्या सब हमारे हैं।

हिन्दू फकीर देश-दुनियां को सुधारेगा... लोग इस्लाम को हकीकत में नहीं मानते। दया-रहम खो गया। हिन्दू, मुसलमान, ईसाइयों की दया दृष्टि खत्म हो गई। मुसलमानों की किताबों में लिखा है कि हिन्दुओं में एक फकीर पैदा होगा जो देश व दुनियां का सुधार करेगा। यही बात बाईबिल तथा रामायण गीता में भी लिखी है:-

जब जब होहिं धरम की हानी तब तब धरि प्रभु मनुज शरीरा।

भगवान कृष्ण ने भी अर्जुन को यही बात समझाई है:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

ऐसी अवस्था में सब लोग वर्ण शंकर हो जायेंगे, असत्य का पालन करेंगे, सत्यवादियों से विवाद करेंगे। ऐसे समय में महान् आत्मा का जन्म होगा।

तेरी गरीबी दूर होने वाली नहीं है... काल भगवान तुम्हारी जान को छोड़ नहीं सकता। बच्चा तेरा नम्बर आनेवाला है नहीं। अभी तो बंगला देश की गरीबी दूर हो रही है। दूर होगी या नहीं यह तो वह लोग जानें। तेरी गरीबी दूर होने वाली है नहीं।

पाकिस्तान कीटाणु बम गिरायेगा... भविष्य में बंगलादेश में क्रांति होगी। बंगलादेश जब खत्म हो जाए तब मान लेना। अबकी लड़ाई में पाकिस्तान कीटाणु बम गिरायेगा। अखबार रेडियो इसके बारे में बाद में बोलेंगे। सभी जानवर पशु-पंछी, कीड़े-मकोड़े जहां तक हवा जाएगी, सब मर जायेंगे। पाकिस्तान वालों से कह दिया है कि जब तुम कीटाणु बम गिराओगे तो ऐसा तूफान चलाया जायेगा कि सभी कीटाणु हवा में उड़कर पाकिस्तान चले जायेंगे और वहीं लोग मरने लगेंगे।

आगे बुरा समय आ रहा है... यदि आपने बुरा काम किया तो आगे बुरा समय आएगा। मैंने सन् 42 में कहा था कि आगे राजे खत्म हो जायेंगे। लोग मांस, मछली, अण्डे बहुतायत से खाने लगेंगे। बहुत सी बातें हैं जिन्हें बताने की उस समय इजाजत नहीं थी। मैं बता रहा था कि सन् 70,71,72 तुम्हारे दुखों, रोने-चिल्लाने, तड़पने, बीमारियों और संकट के कारण बनेंगे। इस समय पढ़े-लिखे लोग जानवरों की तरह इन्द्रिय सुखों में मशगूल हैं। मैंने बहुत पहले कहा था, आगे तूफान आएगा, आदमी, जानवर, अन्न का नुकसान अधिक होगा। सन् 72 के अन्दर दो बैलों वाली कांग्रेस खत्म हो जाएगी।

चीन, अमेरिका पर बम गिरायेगा.... भारत पाकिस्तान में लड़ाई होगी। पूरब का पाकिस्तान खत्म हो जाएगा। मैंने सन् 70 में 4 करोड़ पर्चे बाँटे, सन् 71 में दस करोड़ लोगों को बैठा कर सुनाया और पर्चे बाँटे। उस समय लोग कहते थे फिजूल में बाबाजी बकते हैं। मैंने कहा बच्चा जब हो जाए तब मान लेना। वर्षा आई आदमियों का नुकसान हुआ। पूरब का पाकिस्तान खत्म हुआ। जो जो होता जाए मेरे पर्चो पर निशान लगाते जाओ। अभी पश्चिम में लड़ाई होगी पश्चिम का पाकिस्तान खत्म हो जाएगा तब मान लेना। तुम सब अपने दुखों से निवृत हो जाओ तो हमें प्रसन्नता होगी। बच्चा! अभी तो बंगला देश की गरीबी मिटाई जा रही है, फिर पश्चिम पाकिस्तान की गरीबी मिटाई जाएगी। फिर उत्तर-दक्षिण में लड़ाई होगी। चीन, अमेरिका पर बम गिरायेगा। अमेरिका में चीन के खिलाफ भारी आक्रोश फैल जाएगा। अमेरिका चीन पर हमला करके उसे नष्ट कर देगा। फिर चीन की गरीबी मिटाई जाएगी। बन्दे तेरी गरीबी मिटने का नम्बर आने वाला नहीं है।

एक बीघा में 100 मन धान होगा तब गरीबी दूर होगी... जब चार बीघा जमीन में जब चार सौ मन धान या चार सौ मन गेहूँ किसान के खेत में होगा तब गरीबी दूर होगी। अभी तकलीफ, बीमारी आई कहां? अभी तो इनका सामान तैयार हो रहा है। रोने, मरने, तड़पने, त्राहि-त्राहि करने की अभी तैयारी हो रही है, कार्य बाद में शुरू होगा। मामूली नहीं भारी से भारी परिवर्तन होगा। सभी मनुष्य अपना-अपना परिवर्तन कर लें, अभी समय है। भूकम्प, तूफान, प्राकृतिक प्रकोप आने पर क्या होगा? ऐसी भयानक घटना होगी जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

सबसे बड़ा देश भारत .... आगे दुनियाँ के बहुत से छोटे-छोटे देश टूटकर भारत में मिल जायेंगे। दुनियाँ का सबसे बड़ा देश भारत का साम्राज्य होगा।

राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री शाकाहारी होंगे... इस भारतवर्ष में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री, एम.एल.ए., एम.पी., निरामिष, मद्यपान रहित और शाकाहारी होंगे। मांस, मछली, अण्डे खाने-वाले राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नहीं होंगे। रिश्वत लेने वाला नहीं होगा। उस समय एक पैसा भी रिश्वत नहीं ली जायेगी।

राजधानी दिल्ली से हटेगी... भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली से हटाकर सैंकड़ों या पचासों मील दूर कर दी जायेगी। इसका महात्मा द्वारा शुभ मुहूर्त होगा। अच्छे जमीन पर मकान बनता है तो लोग सुखी हो जाते हैं। दिल्ली से हटकर एक पवित्र भूमि पर राजधानी बनेगी। वहां एक नया विधान बनेगा उसके अनुसार विश्व के सारे मुल्क अपना न्याय करायेंगे। यह जब हो जाए तब मान लेना--। सारे भारत में नसबन्दी बन्द हो जाएगी। देश में वकालत का पेशा खत्म हो जाएगा। वकीलों को रोजी पहले दे दी जाएगी। कोई कसाई नहीं होगा। कसाई को रोजी पहले मिल जाएगी। उसे आज की रोजी से 100 गुना ज्यादा मिलेगा।

कौन कर देगा इससे हमारा क्या मतलब। हमें परिवार सुख से मतलब है। हमें तो न्याय, प्रेम, सेवा, सत्कार, आदर मिलना चाहिए। हम ज्ञानवान बन जायें, इसी की आवश्यकता है। हमारी आत्मा को उठाकर ऊपर के लोकों में पहुंचा दिया जाए।

देश में 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक आपात्काल लागू रहा इस बीच परम् पूज्य स्वामी जी महाराज को 29 जून 1975 से 23 मार्च 1977 तक चार जेलों में रखा गया और बेड़ियाँ पहनाई गईं

अब आप मेरी बात सुनें... मैं 21 महीने जेल में रहा। 29 जून सन् 1975 में अपने मथुरा आश्रम से ले जाकर जेल में बन्द कर दिया गया था और तब से लेकर (29 जून से लेकर) 23 मार्च 1977 तक जेल में रहा। चार जेलों की यात्रा की। आगरा, बरेली, बंगलौर और दिल्ली की तिहाड़ जेल की और हमको बेड़ियाँ पहनाकर रखा गया था। बेड़ियाँ तो आप जेल की समझते ही होंगे, कभी देखा ही होगा आपने? बेड़ियाँ डाली जाती हैं। और जब तौलाया गया किसी के आदेश से, बेड़ियाँ चार किलो की थी। लेकिन हमने तो भगवान की जो इच्छा है उसके आधार पर प्रसन्नता से पहर ली इसमें भी कोई उसकी मर्जी रही होगी। यह बेड़ियाँ पहनकर जेल में रहना पड़ा और 125 दिन तक ये बेड़ियाँ पहनीं, बाकी जिस यातना से जेल में रखा गया वह तो छोड़िए। बात को बड़े ध्यान से सुनिए।

मैं आने वाली बातें बतला देता था...21 महीने जेल में रहा। राजनीतिक रूप में मुझे बन्द किया गया था। मैं खुद धार्मिक था लेकिन कुछ आने वाली बातें कबीर की तरह, कुछ नानक की तरह, तुलसीदास की तरह, कुछ मीरा की तरह, कुछ राम की तरह, कुछ कृष्ण की तरह आनेवाली बातों को बता दिया करता था। इसी से जो सरकार समाप्त हो गई हमसे विरोध करती थी। उसकी दुश्मनी थी और बड़ी भारी दुश्मनी थी। सरकार ने तो हमको इस रूप में बन्द किया था कि ये जो इन्होंने दीवारों पर और पर्चों में, अखबारों में और जो व्याख्यान दिए हैं कि ये शासन सन् 76 में समाप्त हो जाएगा तो मैं बाबाजी को ही सन् 76 में समाप्त कर दूँगा।

कहैं जयगुरुदेव पुकार, जमाना बदलेगा

कहैं जयगुरुदेव पुकार, जमाना बदलेगा,
सुनते जाना सभी नर-नारि, जमाना बदलेगा
छोटे-बड़े जितने पद-अधिकारी, सब कोई होंगे शाकाहारी,
बंद हो जाएगा मांसाहार, जमाना बदलेगा।
मांस, मछली, अण्डा जो सेवन करेंगे, ताड़ी, शराब, भांग-गाँजा पियेंगे,
उनका पद छीन लेगी सरकार, जमाना बदलेगा।
एम.पी., एम.एल.ए. और मंत्री, मिनिस्टर, सभी लोग होंगे शाकाहारी कट्टर
बन्द होगा सभी दुराचार, जमाना बदलेगा।
विदेशी बैंक में जो धन हैं छिपाए, वापस छिहत्तर सन् तक लायें,
नहीं पछतायेंगे सिर मार, जमाना बदलेगा।
बन्द हो जाये हड़ताल, तोड़फोड़, आन्दोलन, बन्द हो जाये परिवार नियोजन
बदल जाएगा सभी कारोबार, जमाना बदलेगा।
नग्न सिनेमें बन्द किए जायेंगे, पुलिस सिपाही वेतन तीन सौ पायेंगे,
सभी बन्द हो चोरी, व्याभिचार, जमाना बदलेगा।
दिल्ली से राजधानी हटेगी, यू.एन.ओ. भारत में चलेगी,
निर्णय लेने आएगा संसार, जमाना बदलेगा।
राष्ट्रभाषा होगी संस्कृत और हिन्दी, रिश्वतखोरी पे लग जाएगी पाबंदी,
फैल जाएगा सबमें सदाचार, जमाना बदलेगा।
कृषकों के कर्ज माफ हो जायेंगे, प्राइमरी अध्यापक वेतन तीन सौ पायेंगे,
होगा बच्चों में भारी सुधार, जमाना बदलेगा।
बन्द हो जाएगा गउओं का कटना, कोई नहीं होगी अनैतिक घटना,
मांस-मदिरा का बन्द हो बजार, जमाना बदलेगा।
कॉलेज से निकल छात्र नौकरी को पायेंगे, वृद्ध, अपाहिज़ पैसा राजकोष से पायेंगे
सुखी होगा सभी परिवार, जमाना बदलेगा।
आठ रुपया रोज मजदूरी मिलेगी, राष्ट्रपति चुनाव सीधे जनता करेगी,
जो कि हैं देश के कर्णधार, जमाना बदलेगा।

सत्य और अहिंसा की होड़ लग जाएगी, चोरी, ठगी, झूठ की निशानी मिट जाएगी,
सब हों पूर्ण निरामिषहार, जमाना बदलेगा।
साधन, भजन की सब करेंगे कमाई, मांसाहारियों की हो जाएगी सफाई,
वर्षा, सूखा पड़ेगा अकाल, जमाना बदलेगा।
परजा बहुत मरेगी जग में, लाशें पड़ी सड़ेंगी घर-घर में,
उठाने वाले मिलेंगे न यार, जमाना बदलेगा।
पूरब-पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, छिड़े लड़ाई आए दुर्दिन,
भारी संख्या में होगा नरसंहार, जमाना बदलेगा।
अन्न का दाना नहीं मिलेगा, टैक्स अभी भी और बढ़ेगा,
धर्म जल्दी से लो अब धार, जमाना बदलेगा।
सुनते जाना सभी नर-नारि जमाना बदलेगा

[1971]

परम् पूज्य स्वामी जी महाराज प्रेमियों की व्यथा सुनते हुए

जयगुरुदेव

जयगुरुदेव

संसार के अवाम को जानकारी कराई जाती है आप सब सोचो कहाँ से आये हो, कहाँ जाओगे? क्या यह शरीर तुम्हारा है, जो घमण्ड करते हो। सोचो ! जब श्वाँसों की पूँजी खतम होगी तत्काल शरीर से जीवात्मा को मकान मालिक निकाल देगा। धन,दौलत,मकान,जमीन, दोस्त, मित्र, भाई-बन्धु, पति-पत्नी यहाँ छूट जायेंगे। किसके लिये जोड़ रहे हो।

जयगुरुदेव नाम भगवान का है, मेरा नहीं

मौत के समय जब तुम इस नाम को बोलोगे तो मैं तुम्हे मिलूँगा, और तुम्हारी सहायता करूँगा। अगर तुम यह नाम नहीं लोगे तो मैं नहीं मिलूँगा। यदि तुमने 'जयगुरुदेव' का नाम लिया और तुम्हें नहीं मिला तो यह नाम झूठा सिद्ध हो जायेगा। – बाबा जयगुरुदेव

बाबा जयगुरुदेव जी के गुरु जी महाराज

बाबा जयगुरुदेव जी के पूज्यपाद गुरु जी महाराज पूरे संत थे। वह गाँव चिरौली, तहसील-इगलास, जिला-अलीगढ़, उ.प्र. के निवासी थे। बाबा जयगुरुदेव जी ने अपने गुरु जी से नामदान (दीक्षा) चिरौली गाँव में जाकर ली थी। सन् 1948 से पहले गुरु जी महाराज का आदेश हुआ था जब कभी आश्रम बनाना तो मथुरा में बनाना। गुरु जी महाराज के आदेश से, पहले कृष्णानगर मथुरा में चिरौली संत आश्रम बनाया। यह छोटा पड़ जाने के कारण मधुवन, आगरा-दिल्ली बाई-पास मथुरा में दूसरी जमीन तलाश कर 1964 में लिया। अब बाबा जयगुरुदेव जी का आश्रम आगरा-दिल्ली बाई-पास पर मथुरा में है। इसी राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर-2 पर उनका भव्य स्मृति चिन्ह जयगुरुदेव नाम योग साधना मन्दिर मथुरा, उ.प्र. में बनवाया है।